26

परस्मैपदात्मनेपद प्रकरण

पूर्व में आप भ्वादिगण प्रकरणों में लकार परिचय प्राप्त कर चुके हैं। वहां धातु से विहित लकार के स्थान पर परस्मैपद और आत्मनेपद यह दो प्रकार का तिङ्प्रत्यय आदेश रूप में विधान किया गया है। किन धातुओं से परस्मैपद होता है अथवा किन धातुओं से आत्मनेपद होता है, इस पाठ में स्पष्ट किया जा रहा है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यह सूत्र अनुदात्तेत् धातुओं और ङित्धातुओं से आत्मनेपद का विधान करता है। और कर्तृगामी क्रियाफल होने पर स्वरितेत् धातुओं से और ञित् धातुओं से आत्मनेपद का विधान होता है स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र के योग से। इस प्रकार शेष से अर्थात् जो धातु आत्मनेपद के लिए निमित्त नहीं है उस धातु से परस्मैपद होता है, शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् इस शास्त्र से। अर्थभेद से और उपसर्गादि के योग से कहीं परस्मैपद अथवा कहीं आत्मनेपद होता है, अतः इस पाठ में विशेष स्थल प्रदर्शित करने के लिए परस्मैपद तथा आत्मनेपद विधान की आलोचना की जा रही है। वहाँ पहले आत्मनेपद विधान की आलोचना की जाती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- क्या आत्मनेपद है और क्या परस्मैपद यह जान पाने में;
- कहीं आत्मनेपद प्राप्त होने पर भी नहीं होता है यह जान पाने में;
  कहीं परस्मैपद प्राप्त होने पर भी नहीं होता है यह जान पाने में;
- कहीं अर्थभेद से परस्मैपदात्मनेपद होता है अथवा कहीं उस उपसर्ग बल से इस विषय में स्पष्ट ज्ञान जान पाने में।

टिप्पणियाँ

आत्मनेपदप्रकरण

आत्मनेपद प्रकरण होने से मूल सूत्र को पहले आलोचित करते हैं-

26.1 अनुदात्तङित आत्मनेपदम्॥ (१.३.१२)

सूत्रार्थ-उपदेश में जो अनुदात्तेत् और ङित् तदन्त धातु से ल के स्थान पर आत्मनेपद हो।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। अनुदात्तङितः (५/१), आत्मनेपदम् (१/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अनुदात्तश्च ङ् च अनुदात्तङौ, तौ इतौ यस्य स अनुदात्तङित्, तस्मात् अनुदात्तङितः। भूवादयो धातवः इस सूत्र से प्रथमान्तस्य धातवः इसका पञ्चमी एकवचनान्त रूप से क विपरिणाम होने पर धातोः इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार अनुदात्तेत् धातु से और ङित्-धातु से आत्मनेपद अर्थात् तङ्प्रत्याहारस्थ त-आताम्-झ आदि प्रत्यय होते हैं। अतः अनुदात्तङित आत्मनेपदम् इस सूत्र सम्बन्धी धातुएँ आत्मनेपदी धातुएँ कहलाती हैं।

उदाहरण - ङित्धातु-शीङ् स्वप्ने इस धातु में ङकार इत्संज्ञक है अतः प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद होता है। तत्पश्चात् प्रथमपुरुष एकवचन में शेते यह रूप होता है।

बाधृ लोडने (प्रतिघाते) यह धातु अनुदात्तेत् है, अतः प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद में प्रथमपुरुष एकवचन में बांधते यह रूप होता है, और एध वृद्धौ यह धातु भी अनुदात्तेत् है अतः प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद में प्रथमपुरुष एकवचन में तप्रत्यय होने पर एधते यह रूप होता है। एतेषां प्रक्रिया भ्वादिप्रकणेषु द्रष्टव्या।

भाव अर्थ और कर्म अर्थ में आत्मनेपद होता है यह दिखाने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है।

26.2 भावकर्मणोः॥ (१.३.१३)

सूत्रार्थ - भाव और कर्म अर्थ की धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र एक पदात्मक है। लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः यहाँ से लः यह पद और अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् यह पद अनुवर्तित होता है। भावकर्मणोः यह सप्तमी द्विवचनान्त है। भावः च कर्म च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वे भावकर्मणी, तयोः भावकर्मणोः। भावार्थ में और कर्मार्थ में धातु से विहित लकार के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय होता है यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार ही भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद होता है, परस्मैपद कभी भी नहीं होता है। वहाँ धातु आत्मनेपदी, परस्मैपदी अथवा उभयपदी हो भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद ही होता है।

उदाहरण - भावार्थ का उदाहरण-बभुवे। कर्मार्थ का उदाहरण-अनुबभूवे। इनका विस्तारपूर्वक व्याख्यान भावकर्म प्रकरण में देखना चाहिए।

क्रियाविनिमय अर्थ में भी धातु से आत्मनेपद को प्रदर्शित करने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं।

26.3 कर्तरि कर्मव्यतिहारे॥ (१.३.१४)

सूत्रार्थ – क्रियाविनिमय द्योतित होने पर कर्ता में आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में पद द्वय है। कर्तरि (७/१), कर्मव्यतिहारे (७/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। कर्तरि यह सप्तमी एकवचनान्त है। कर्मव्यतिहारे इसमें भी उसी प्रकार। कर्मण: व्यतिहार: इति षष्ठीतत्पुरुषे कर्मव्यतिहार:, तस्मिन् कर्मव्यतिहारे। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् यह पद अनुवर्तित होता है। इस सूत्र में कर्मपदार्थ क्रिया है और व्यतिहार पदार्थ विनिमय है। तत्पश्चात् कर्मव्यतिहार इसका क्रियाविनिमय यह अर्थ है।और कर्तृपदार्थ कर्तृवाच्य है। इस प्रकार क्रिया का विनिमय द्योतित होने पर कर्तृवाच्य में आत्मनेपद होता है, यह सूत्रार्थ होता है।

यहाँ विशेष – कर्मव्यतिहार अर्थ प्राप्ति के लिए धातु से पूर्व प्राय: वि-अति ये दोनों उपसर्ग प्रयोग किए जाते है। कहीं उसके बिना अथवा अन्य उपसर्ग के योग से व्यतिहारार्थ प्रकट होता है। यथा- प्रियामुखं किंपुरुषश्चुचुम्बे (कालिदास:)।

उदाहरण – ब्राह्मण: क्षेत्रं व्यतिलुनीते (अन्य के योग्य छेदन क्रिया को अन्य करता है)।

सूत्रार्थसमन्वय – वि-अति पूर्वक लूञ् छेदने इस क्र्यादिगणीय उभयपदी धातु से प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद विधान होता है, छेदनक्रिया का व्यतिहारार्थ होने से। इस ञित्त्व धातु से स्वरितञित: कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र से पक्ष में परगामी क्रियाफल में परस्मैपद की प्राप्ति होने पर उसको बांधकर केवल आत्मनेपद विधान करने के लिए यह सूत्र आरम्भ किया गया है।

पूर्वसूत्र से जो आत्मनेपद विहित है, उसका ही अपवाद प्रदर्शित करने के लिए यह योग आरम्भ करते है।

26.4 न गतिहिंसार्थेभ्य:॥ (१.३.१५)

सूत्रार्थ – गमनार्थक धातुओं और हिंसार्थक धातुओं से क्रिया का विनिमयार्थ द्योतित होने पर आत्मनेपद नहीं होता है।

सूत्रव्याख्या – इस निषेधसूत्र में पद द्वय है। न (अव्ययम्), गतिहिंसार्थेभ्य: (५/३) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। गतिश्च हिंसा च गतिहिंसे, गतिहिंसे अर्थौ येषां ते गतिहिंसार्था: तेभ्य: गतिहिंसार्थेभ्य: यह द्वन्द्वगर्भ बहुव्रीहिसमास है। कर्तरि कर्मव्यतिहारे यहाँ से कर्मव्यतिहारे इस पद का और अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। गतिहिंसार्थेभ्य: कर्मव्यतिहारे आत्मनेपदं न यह वाक्य योजना है। तथा गमनार्थक धातुओं से और हिंसार्थक धातुओं से क्रिया का विनिमयार्थ द्योतित होने पर आत्मनेपद नहीं होता है यह सूत्रार्थ फलित होता है।

उदाहरण – व्यतिगच्छन्ति।

टिप्पणियाँ

सूत्रार्थ समन्वय - वि-अति उपसर्गपूर्वक गमनार्थक गम् (गम्लृ गतौ. भ्वा.परस्मै) धातु से कर्मव्यतिहारार्थ में कर्तरि कर्मव्यतिहारे इस सूत्र से आत्मनेपद प्राप्त है। किन्तु प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है गमनार्थक धातु होने से। तत्पश्चात् शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद ही होता है।

विश् निवेशने इस तुदादिगणीय परस्मैपदी धातु से परस्मैपद प्राप्त है किन्तु नि इस उपसर्ग के योग से आत्मनेपद हो, अतः यह सूत्र आरम्भ करते हैं-

26.5 नेर्विशः॥ (१.३.१७)

सूत्रार्थ - नि उपसर्ग पूर्वक विश् धातु से परे आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में पदद्वय है। नेः (५/१), विशः (५/१) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। उससे सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण- निविशते।

सूत्रार्थसमन्वय - यहाँ नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु से शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद विधान किया जाता है। क्योंकि यहाँ निपूर्वक विश् धातु है। नैषधीयकार श्रीहर्ष का भी प्रयोग है- निविशते यदि शूकशिखा पदे (४.११)।

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये इस धातु से ञित्त्व होने से पक्ष में परगामी क्रियाफल होने पर शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर यह अपवाद सूत्र आरम्भ करते है।

26.6 परिव्यवेभ्यः क्रियः॥ (१.३.१८)

सूत्रार्थ- परि, वि, अव इन उपसर्गों से परे जो क्री धातु है ,उससे आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में पद द्वय है। परिव्यवेभ्यः (५/३), क्रियः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। परिश्च विश्च अवश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे परिव्यवाः, तेभ्यः परिव्यवेभ्यः। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति रहोती है। परि, वि, अव इन उपसर्गों से पर जो क्री धातु है, उससे आत्मनेपद होता है,इस प्रकार पूर्वोक्त अर्थ सिद्ध होता है। स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद प्राप्त होता है। किन्तु प्रकृत सूत्र से अकर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी आत्मनेपद हो, किन्तु परस्मैपद न हो अतः यह सूत्र आरम्भ किया गया है।

उदाहरण- परिक्रीणीते यहाँ परि उपसर्गपूर्वक क्री धातु है। विक्रीणीते यहाँ वि उपसर्गपूर्वक क्री धातु है। अवक्रीणीते यहाँ अव उपसर्गपूर्वक क्री धातु है।

टिप्पणियाँ

जि जये इस परस्मैपदी भ्वादिगणीय धातु से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर विशिष्ट उपसर्ग के योग से आत्मनेपद विधान के लिए यह योग आरम्भ होता है-

26.7 विपराभ्यां जेः॥ (१.३.१९)

सूत्रार्थ - वि उपसर्ग पूर्वक और परा उपसर्गपूर्वक परे कू जि धातु से आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में पद द्वय है। विपराभ्याम् (५/२), जेः (५/१) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। विश्च पराश्च विपरौ, ताभ्यां विपराभ्याम्, यह इतरेतरयोगद्वन्द्व है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पदस्य कू अनुवृत्ति होती है। और इस प्रकार प्रागुक्तार्थ सिद्ध होता है।

यहाँ विशेष - केवल जि धातु तो परस्मैपदी होती है किन्तु वि और परा उपसर्गद्वय के योग से जि धातु से आत्मनेपद होता है। इस प्रकार यह सूत्र शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इसका अपवाद भूत है।

उदाहरण - विजयते यहाँ वि उपसर्गपूर्वक जि धातु है। पराजयते यहाँ परा पूर्वक जिधातु है।

ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वादि.परस्मै.)धातु से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर विशिष्ट उपसर्ग योग से आत्मनेपद विधान के लिए यह योग आरम्भ करते हैं-

26.8 समवप्रविभ्यः स्थः॥ (१.३.२२)

सूत्रार्थ - सम्पूर्वक, अवपूर्वक, प्रपूर्वक और विपूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में पद द्वय है। समवप्रविभ्यः (५/३), स्थः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। सम् च अवश्च प्रश्च विश्च समवप्रविभ्यः तेभ्यः समवप्रविभ्यः, यह इतरेतरयोगद्वन्द्व है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार पूर्वोक्तार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण- सम्-स्था-सन्तिष्ठते। अव-स्था-अवतिष्ठते। प्र-स्था-प्रतिष्ठते। वि-स्था-वितिष्ठते।

पाठगत प्रश्न 26.1

1. कर्मव्यतिहारः क्या है?
2. सम्पूर्वक स्था धातु से आत्मनेपद होता है। क्या यदि होता है तो क्या रूप है?
3. विपराभ्यां जेः इसका उदाहरण क्या है?
4. आत्मनेपद प्रत्यय विधायक सूत्र लिखिए।

टिप्पणियाँ

5. व्यतिगच्छन्ति यहाँ आत्मनेपद किससे नहीं है?

6. नेर्विशः इसका उदाहरण क्या है?

7. विक्रीणीते विक्रीणाति इन दोनों में कौन सा सही है?

8. व्यतिलुनीते इसका क्या अर्थ है?

ज्ञा अवबोधने (क्र्या.परस्मै) धातु से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर आत्मनेपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है -

26.9 अपह्नवे ज्ञः॥ (१.३.४४)

सूत्रार्थ - अपलाप अर्थ में ज्ञा धातु से परे आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। अपह्नवे (७/१), ज्ञः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अपह्नवे इति सप्तमी एकवचनान्त है। ज्ञः यह पञ्चमी एकवचनान्त है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। अपह्नव अपलाप है। तथा अपलापार्थ में गम्यमान होने पर ज्ञा धातु से आत्मनेपद ही होता है, यह सिद्ध होता है।

यहाँ विशेष - उपसर्ग रहित अवस्था में ज्ञा धातु से अपलाप अर्थ नहीं है।यह अर्थ तो अप इस उपसर्ग के योग से प्राप्त होता है। अतः अप उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु से इस अर्थ में क्रियाफल के कर्तृगामी अथवा परगामी होने पर आत्मनेपद होता है।

उदाहरण - शतम् अपजानीते। इस वाक्य का शतम् अपलपति यह अर्थ है।यहाँ अप उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु अपलाप अर्थ में है।

चर गतौ भक्षणे च (भ्वा.परस्मै) धातु से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर आत्मनेपद के लिए यह योग आरम्भ करते हैं-

26.10 समस्तृतीयायुक्तात्॥ (१.३.५४)

सूत्रार्थ - तृतीयान्त पद से युक्त सम् से परे चर् धातु से आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। समः (५/१), तृतीयायुक्तात् (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। तृतीयया युक्तः तृतीयायुक्त तस्मात् तृतीयायुक्तात् यह तृतीयातत्पुरुष समास है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। उदश्चरः सकर्मकात् यहाँ से चर इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण - रथेन सञ्चरते।

सूत्रार्थसमन्वय - रथेन इस तृतीयान्त पद से युक्त धातु है -सम् उपसर्गपूर्वक चर्। अतः प्रकृत सूत्र से चर् धातु से आत्मनेपद विधान होता है। उससे सञ्चरते यह रूप सिद्ध होता है। और वैसा

ही कालिदास का प्रयोग है - क्वचित् पथा सञ्चरते सुराणाम् (रघु. १३.१९)। जब तृतीयान्त पद का अभाव हो तब तो आत्मनेपद नहीं होता है, जैसे - उभौ लोकौ सञ्चरसि इमं चामुं च देवल। (काशिका)।

दाण् दाने (भ्वा.परस्मै) धातु से शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से परस्मैपद प्राप्त होने पर यह अपवादसूत्र आरम्भ किया गया है।

26.11 दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे॥ (१.३.५५)

सूत्रार्थ - तृतीयान्त पद से युक्त सम्पूर्वक दाण् धातु से आत्मनेपद होता है यदि तृतीया चतुर्थी के अर्थ में प्रयुक्त होती है।

सूत्रव्याख्या - इस विधिसूत्र में पञ्च पद हैं। दाणः (५/१), च (अव्ययम्) सा (१/१) चेत् (अव्ययम्) चतुर्थ्यर्थे (७/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। चतुर्थ्याः अर्थः चतुर्थ्यर्थः, तस्मिन् चतुर्थ्यर्थे यह षष्ठी तत्पुरुष है। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। समस्ततृतीयायुक्तात् यह सूत्र अनुवर्तित होता है। इस प्रकार तृतीयान्त पद से युक्त सम्पूर्वक दाण् धातु से आत्मनेपद होता है , यदि तृतीया चतुर्थी के अर्थ में प्रयुक्त हो। चतुर्थी के अर्थ में तृतीया तो अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया वाच्य इस वार्तिक से विधान की जाती है यह कारक प्रकरण में ज्ञात होगा।

यहाँ विशेष - समस्ततृतीयायुक्तात् (१.३.५४), दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे (१.३.५५) ये दोनों सूत्र किसी दूसरे उपसर्गों से व्यवहित होने पर भी प्रवर्तित होते हैं। यथा - धर्मम् उदाचरते यहाँ उत् -चर् इन दोनों के मध्य में आङ् यह उपसर्ग है फिर भी प्रकृत सूत्र से आत्मनेपद होता है।

उदाहरण - दास्या संयच्छते कामुकः।

सूत्रार्थसमन्वय - दास्या संयच्छते कामुकः यहाँ दासी के साथ कामुक सम्पर्क ही अशिष्टव्यवहार शब्द से कहा जाता है। दासी को उद्देश्य करके ही तादृश सम्पर्क किया जाता है। अतः दासी यहाँ सम्प्रदान है। अतः सम्प्रदाने चतुर्थी इस सूत्र से चतुर्थी प्राप्त है किन्तु अशिष्टव्यवहार में दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया वाच्या इस से चतुर्थी को बाँधकर तृतीया विधान की जाती है। इस प्रकार प्रकृत सूत्र का अवकाश प्राप्त हुआ। अतः आत्मनेपद प्रयोग है।

सन्नन्त से आत्मनेपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है-

26.12 पूर्ववत्सनः॥ (१.३.६२)

सूत्रार्थ - सन् पूर्वक जो धातु है, स्तेन तुल्यं सन्नन्तादप्यात्मनेपदं स्यात्।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। पूर्ववत् (अव्ययम्), सनः (५/१)यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। पूर्वेण इव पूर्ववत्। तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः इस पूर्वशब्द से वति प्रत्यय है। अनुदात्तङित

टिप्पणियाँ

आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। सन्प्रत्यय से पूर्व जो आत्मनेपदी धातु है उससे तुल्य सन्नन्त धातु से भी आत्मनेपद होता है।

यहां विशेष – यदि किसी उपसर्ग के योग से कोई धातु आत्मनेपदी होती है तब उस उपसर्ग के होने पर सन्नन्त से पर भी उस धातु से आत्मनेपद होता है यथा- निविविक्षते। यहाँ नेर्विशः इस सूत्र से नि उपसर्गपूर्वक विश् धातु से आत्मनेपद विधान होता है। इस प्रकार सन्नन्त से भी विश् धातु से आत्मनेपद होता है।

उदाहरण – शिशयिषते।

सूत्रार्थसमन्वय – शीङ् स्वप्ने यह ङित्त्व धातु आत्मनेपदी है। अतः इस धातु से सन्प्रत्यय विहित होने पर शिशयिषते यह रूप सिद्ध होता है। इस प्रकार ही एध वृद्धौ यह धातु अनुदात्तेत् है इस कारण से आत्मनेपदी है।अतः सन्प्रत्यय से पर भी अर्थात् सन्नन्त एध् धातु से भी तो आत्मनेपद होता है। उससे एदिधिषते यह रूप सिद्ध होता है। डुकृञ् करणे यह धातु ञित्त्व होने से आत्मनेपदी होती है, कर्तृगामी क्रियाफल होने पर। अतः सन्नन्त से पर भी आत्मनेपद होता है। अतः चिकीर्षते यह रूप सिद्ध होता है। परगामी क्रियाफल में तो चिकीर्षति यह रूप सिद्ध होता है। जब तो धातु आत्मनेपद के निमित्तहीन है तब तो सन्नन्त से पर भी परस्मैपद ही होता है, न कि आत्मनेपद, यथा- भू धातु से बुभूषति यह रूप होता है , गम् धातु से जिगमिषति यह रूप होता है।

डुकृञ् करणे इस तनादिगणीय धातु से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद होता है। परगामी क्रियाफल में तो परस्मैपद होता है , यह आप जानते ही हैं। वहाँ परगामी क्रियाफल होने पर भी आत्मनेपद विधान के लिए यह सूत्र आरंभ करते हैं –

26.13 गन्धनाऽवक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः (१.३.३२)

सूत्रार्थ – गन्धन, अवक्षेपण, सेवन, साहसिक्य, प्रतियत्न, प्रकथन, उपयोग इन अर्थों में कृ धातु से आत्मनेपद होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। गन्धनाऽवक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु (७.३), कृञः (५/१) इति सूत्रगत पदों का विच्छेद है। गन्धनञ्च अवक्षेपणञ्च सेवनञ्च साहसिक्यञ्च प्रतियत्नञ्च प्रकथनञ्च उपयोगश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे गन्धनाऽवक्षेपण सेवनसाहसिक्य प्रतियत्नप्रकथनोपयोगाः तेषु गन्धनाऽवक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु। अनुदात्तङित आत्मनेपदम् यहाँ से आत्मनेपदम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। गन्धन सूचन है, गन्धनम् अपकारप्रयुक्तं हिंसात्मकं कर्म ऐसा काशिका में है। अवक्षेपण भर्त्सन है। बल से प्रवृत्त का कर्म साहसिक्य कहलाता है। प्रतियत्न उत्पादन है। प्रकृष्ट कथन प्रकथन है। इस प्रकार गन्धन, अवक्षेपण, सेवन, साहसिक्य, प्रतियत्न, प्रकथन और उपयोग इन अर्थों में कृ धातु से आत्मनेपद होता है, यह सूत्रार्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण

1. **गन्धनम्** – स तमुत्कुरुते। वह उसको सूचना करता है यह वाक्यार्थ है।
2. **अवक्षेपणम्** – श्येनो वर्तिकाम् उदाकुरुते। बाज बटेर को फटकारता है यह वाक्यार्थ है। इस प्रकार ही – दुर्वृत्तान् अवकुरुते।
3. **सेवनम्**– हरिम् उपकुरुते भक्तः। भक्त हरि की सेवा करता है ,यह वाक्यार्थ है।
4. **साहसिक्यम्** – परदारान् प्रकुरुते कामुकः। कामुक पर स्त्रियों पर बल से प्रवर्तित होता है यह वाक्यार्थ है।
5. **प्रतियत्नः** – एधोदकस्य उपस्कुरुते। गुण को धारण करता है, यह अर्थ है।
6. **प्रकथनम्** – गाथाः प्रकुरुते गायकः। प्रकृष्ट रूप से कहता है, यह अर्थ है।
7. **उपयोगः** – शतं प्रकुरुते वणिक्। सौ को व्यय करता है, यह अर्थ है

इनसे भिन्न अर्थ में तो आत्मनेपद नहीं होता है , यथा कटं करोति। किन्तु यहाँ कर्तृऽभिप्राय क्रियाफल होने पर आत्मनेपद होने योग्य है। इस प्रकार आत्मनेपद प्रक्रिया समाप्त हुई।

पाठगत प्रश्न 26.2

1. शतम् अपजानीते इस वाक्य का क्या अर्थ है?
2. अपजानीते यहां अप उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु किस अर्थ में है?
3. समस्त तृतीयायुक्तात् इसका क्या उदाहरण है?
4. गन्धनादिसूत्रं को पूरा कीजिए।
5. उत्कुरुते इस पद का क्या अर्थ है?
6. पूर्ववत्सनः इसका क्या अर्थ है?
7. प्रकुरुते इसका क्या अर्थ है?
8. दास्या संयच्छते कामुकः यहां आत्मनेपद किससे होता है?

परस्मैपदप्रक्रिया

धातु से विहित लकार के स्थान पर परस्मैपद और आत्मनेपद द्विविध तिङ्प्रत्यय आदेश रूप से विधान किए जाते हैं। यह आप पूर्व में जान चुके हैं। वहां आत्मनेपद के विषय में भी जान चुके हैं। अब परस्मैपद के विषय में कहा जा रहा है। परस्मैपद विधान विषयक दो सूत्र मुख्य है। स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले यह एक है,दूसरा शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यह है। प्रथम से तो परगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद विधान किया जाता है, यह आत्मनेपद प्रकरण के आरम्भ में कहा

टिप्पणियाँ

ही गया है। आत्मेपद विधान के लिए जितने निमित्त हैं, उन निमित्तों से हीन होने पर धातु से परस्मैपद का विधान होता है। यथा भवति, पठति, वदति इत्यादि। किन्तु यह साधारण नियम है। अब विशेष नियमों को कहा जाता है। वहाँ उभयपद धातुओं से कर्तृऽभिप्राय क्रियाफल होने पर प्राप्त आत्मनेपद का बाध किया जाता है अथवा आत्मनेपदी धातुओं से प्राप्त आत्मनेपद का साक्षात् बाध विधान होने जाता है। उन सूत्रों की यहां व्याख्या करते हैं।

कृ धातु ञित्त्व होने से परगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद सिद्ध होती है,और कर्तृगामिनि क्रियाफले च आत्मनेपदमपि सिद्धमस्ति। किन्तु कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी विशिष्ट उपसर्ग के योग से परस्मैपद मात्र विधान के लिए यह विधिसूत्र आरंभ करते हैं-

26.14 अनुपराभ्यां कृञः॥ (१.३.७९)

सूत्रार्थ - अनु इस उपसर्गपूर्वक और परा इस उपसर्गपूर्वक से कृ धातु से परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। अनुपराभ्याम् (५/२) कृञः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अनुश्च पराश्च तयोरितरेतरयोगद्वन्द्वे अनुपरौ ताभ्याम् अनुपराभ्याम्। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि परस्मैपदम् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। अनु उपसर्गपूर्वक और परा उपसर्गपूर्वक कृ धातु से परस्मैपद होता है,यह सूत्रार्थ है। कृ धातु ञित् है अतः परगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद ही प्राप्त है। उस कारण से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र है। किञ्च गन्धनम्, अवक्षेपणं, सेवनं, साहसिक्यं, प्रतियत्नः, प्रकथनम्, उपयोगः इन अर्थों में परगामी क्रियाफल होने पर कृ धातु से जो आत्मनेपद प्राप्त है उसका भी यह सूत्र अपवाद है।

यहाँ विशेष - इस सूत्र में शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि इस पदस्य की अनुवृत्ति होती है। अतः कर्तृवाच्य में ही यह प्रयोग है। कर्मवाच्य में तो भावकर्मणोः इससे आत्मनेपद होता है। जैसे-अनुक्रियते साध्वी पद्धतिः। पराक्रियते समुपस्थिता बाधा।

उदाहरण - अनुकरोति, पराकरोति। यहाँ अनु और परा उपसर्गपूर्वक कृ धातु है।

क्षिप प्रेरणे इस स्वरितेत् धातु से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद प्राप्त होने पर उसको बांध कर परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं-

26.15 अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः॥ (१.३.८०)

सूत्रार्थ - अभि-उपसर्गपूर्वक, प्रति-उपसर्गपूर्वक और अति-उपसर्गपूर्वक क्षिप् धातु से परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। अभिप्रत्यतिभ्यः (५/३) क्षिपः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। अभिश्च प्रतिश्च अतिश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे अभिप्रत्यतयः, तेभ्यः

अभिप्रत्यतिभ्यः। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि, परस्मैपदम् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार पूर्वोक्ता अर्थ सिद्ध होता है।

यहाँ विशेष -यह तुदादिगणीय धातु स्वरितेत् है। अतः कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद प्राप्त है। किन्तु उसको बांधने के लिए यह योग आरम्भ किया जाता है। अभि-प्रति-अति इन उपसर्ग स्थलों में केवल परस्मैपद हो अन्यत्र तो उभयपदी यह धातु हो,यह नियमित करने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है।

उदाहरण- अभिक्षिपति। प्रक्षिपति। अतिक्षिपति।

वह्-धातु से उभयपदी होने से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद प्राप्त होने पर विशिष्ट उपसर्ग के योग से वहाँ भी परस्मैपद विधान के लिए यह योग आरम्भ करते है -

26.16 प्राद्वहः॥ (१.३.८१)।

सूत्रार्थ - प्र उपसर्गपूर्वक वह् धातु से परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या - यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। प्रात् वहः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। प्रात् वहः ये दोनों भी पञ्चमी एकवचनान्त है। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि परस्मैपदम् इन दोनों पदों की अनुवृत्ति होती है। उससे पूर्व में कहा गया अर्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण - प्रवहति।

मृष् धातु से कर्तृऽभिप्राय क्रियाफल होने पर परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरंभ करते है।

26.17 परेर्मृषः॥ (१.३.८१)

सूत्रार्थ - परि उपसर्गपूर्वक मृष् धातु से परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या -यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। परेः मृषः यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। परेः मृषः यह दोनों पञ्चमी एकवचनान्त है। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि परस्मैपदम् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। उससे पहले कहा गया अर्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण - परिमृष्यति।

सूत्रार्थसमन्वय - मृष तितिक्षायाम् यह दिवादिगणीयधातु स्वरितेत् है। अतः स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र से कर्तृऽभिप्राय क्रियाफल होने पर आत्मनेपद प्राप्त हुआ। उस को बांधकर परेर्मृषः इस सूत्र से परस्मैपद होने पर परिमृष्यति यह रूप सिद्ध होता है।

भ्वादिगणीय मृषु सहने इस धातु से परि उपसर्ग पूर्वक होने से प्रकृत सूत्र से परस्मैपद होने पर परिमर्षति यह रूप होता है।

रम् धातु से परस्मैपद विधान करने के लिए यह विधिसूत्र आरंभ करते हैं।

टिप्पणियाँ

26.18 व्याङ्परिभ्यो रमः॥ (१.३.८३)

सूत्रार्थ – वि उपसर्गपूर्वक, आङ् उपसर्गपूर्वक और परि उपसर्गपूर्वक रम् धातु से परस्मैपद विधान किया जाता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। व्याङ्परिभ्यः (५/३), रमः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। विश्च आङ् च परिश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे व्याङ्परयः तेभ्यः व्याङ्परिभ्यः। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि परस्मैपदम् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। उससे पूर्व में कहा गया अर्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण– विरमति। आरमति। परिरमति।

उप उपसर्गपूर्वक रम् धातु से भी परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरंभ करते हैं–

26.19 विभाषाकर्मकात्॥ (१.३.८५)

सूत्रार्थ – उप उपसर्गपूर्वक रम् धातु से विकल्प से परस्मैपद विधान किया जाता है, अकर्मक स्थल पर।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। विभाषा (अव्ययम्) अकर्मकात् (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। उपाच्च यहाँ से उपात् इसकी अनुवृत्ति होती है। व्याङ्परिभ्यो रमः यह रमः इसकी और शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से परस्मैपदम् इसकी अनुवृत्ति होती है। उससे पूर्व में कहा गया अर्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण – उपरमति, उपरमते।

सूत्रार्थ समन्वय – उपरमति यहाँ निवृत्त होता है यह अर्थ है , इस कारण से उप उपसर्गपूर्वक रम् धातु अकर्मक अवस्था में है। अतः प्रकृत सूत्र से विकल्प से परस्मैपद होता है, पक्ष में तो उपरमते आत्मनेपद होता है।

णिचश्च इससे परस्मैपद और आत्मनेपद प्राप्ति होने पर केवल परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ होता है।

26.20 बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्त्रुभ्यो णेः॥ (१.३.८४)

सूत्रार्थ – बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्त्रु इन धातुओं से परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्त्रुभ्यः (५/३), णेः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। बुधश्च, युधश्च, नशश्च, जनश्च, इङ् च, प्रुश्च, द्रुश्च, स्रश्च तेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुवः तेभ्यः बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यः। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि परस्मैपदम् इन दोनों की अनुवृत्ति होती है। णिः इस से णिजन्त का ग्रहण

होता है। इस प्रकार सूत्रार्थ – बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु, स्रु इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद होता है।

यहाँ विशेष – पूर्व उक्त धातुओं से यदि णिच्प्रत्यय होता है तब णिचश्च इस सूत्र से परगामी क्रियाफल विवक्षित होने पर परस्मैपद होता है, कर्तृगामी क्रियाफल विवक्षित होने पर आत्मनेपद होता है, इस अवस्था में कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद हो इस अर्थ के लिए यह सूत्र आरम्भ करते है। अतः यह योग णिचश्च इस सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण– बोधयति पद्मम्। योधयति काष्ठानि। नाशयति दुःखम्। जनयति सुखम्। अध्यापयति वेदम्। प्रावयति प्रापयति यह अर्थ है। द्रावयति विलापयति यह अर्थ है। स्रावयति स्यन्दयति यह अर्थ है।

णिचश्च इससे उभय पदों की प्राप्ति होने पर केवल परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं –

26.21 निगरणचलनार्थेभ्यश्च॥ (१.३.८७)

सूत्रार्थ – भक्षणार्थक और चलनार्थक ण्यन्त धातुओं से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद होता है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र पद द्वयात्मक है। निगरणचलनार्थेभ्यः (५/३) सूत्रगत पदच्छेद है। निगरणं च चलनं च निगरणचलने इति इतरेतरयोगद्वन्द्वः, तौ अर्थौ येषां ते निगरणचलनार्थाः तेभ्यः निगरणचलनार्थेभ्यः। शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि और परस्मैपदम् इसकी अनुवृत्ति होती है। बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः यहाँ से णेः इसकी अनुवृति होती है। भक्षणार्थक और चलनार्थक ण्यन्त धातुओं से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद होता है।यह पूर्व में कहा गया अर्थ सिद्ध होता है।

उदाहरण – निगारयति। आशयति। आदयति। खादयति। भोजयति। चलयति। कम्पयति।

कर्तृगामी क्रियाफल में आत्मनेपद प्राप्ति होने पर वहाँ परस्मैपद विधान के लिए और परगामी क्रियाफल में परस्मैपद विधान के लिए ,इस प्रकार दोनों स्थान पर परस्मैपद विधान के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं –

26.22 अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्॥ (१.३.८८)

सूत्रार्थ – अण्यन्तावस्था में अकर्मक च्चित्तवत्कर्तृकात् ण्यन्तात् परस्मैपद हो।

सूत्रव्याख्या – इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। अणौ (७/१), अकर्मकात् (५/१), चित्तवत्कर्तृकात् (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। न णिः अणिः तस्मिन् अणौ। न विद्यते कर्म यस्य स अकर्मकः, तस्मात् अकर्मकात्, बहुव्रीहि समास है। चित्तम् अस्य अस्तीति चित्तवान्। चित्तवान् कर्ता यस्य स चित्तवत्कर्तृकः तस्मात् चित्तवत्कर्तृकात्, बहुव्रीहि समास है। बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रभ्यो णेः यहाँ से णेः इसकी और शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से परस्मैपदम् इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार

टिप्पणियाँ

अण्यन्तावस्था में जो धातु अकर्मक और चित्तवत् कर्तृक होती है उस धातु से ण्यन्तावस्था में कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद होता है यह सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ है।

विशेष- यह सूत्र णिचश्च इस योग का अपवाद भूत है।

उदाहरण- शेते कृष्णः, तं गोपी शाययति।

सूत्रार्थ समन्वय - शीङ् स्वप्ने यह धातु अण्यन्त अवस्था में अकर्मक ही है। किन्तु अण्यन्तावस्था में कर्ता कृष्णः चित्तवान् है। अतः शी धातु भी चित्तवत्कर्तृक है। तत्पश्चात् शी धातु से णिच्, वृद्धि तथा आयादेश होने पर शायी इस णिजन्त धातु से णिचश्च इस सूत्र से कर्तृगामी क्रियाफल में आत्मनेपद प्राप्ति होने पर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस प्रकृत सूत्र से केवल परस्मैपद विधान होता है। उससे शाययति यह रूप होता है।

अब कर्तृगामी क्रियाफल में भी परस्मैपद प्राप्त होने पर उसको बांधने के लिए यह सूत्र आरम्भ करते हैं -

26.23 न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः॥ (१.३.८९)

सूत्रार्थ - पा, दम्, आङ् उपसर्गपूर्वक यम् और यस्, परि उपसर्गपूर्वक मुह्, रुच्, नृत्, वद्, वस् इन ण्यन्त धातुओं परस्मैपद नहीं होता है।

सूत्रव्याख्या - इस निषेधसूत्र में दो पद है। न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः (५/१) यह सूत्रगत पदों का विच्छेद है। आङ्-पूर्वो यम आङ्यमः, आङ्-पूर्वो यस आङ्यसः, परिपूर्वो मुहः परिमुहः। पाश्च दमिश्च आङ्यमश्च आङ्यसश्च परिमुहश्च रुचिश्च नृतिश्च वदश्च वस् च तेषां समाहारद्वन्द्वे पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवस्, तस्मात् पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुह रुचिनृतिवदवसः। बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः यहाँ से णेः इसकी, और शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से परस्मैपदम् इसकी अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार पा, दम्, आङ्पूर्वक यम्, आङ्पूर्वक यस्, परि पूर्वक यस्, परि पूर्वक मुह्, रुच्, नृत्, वद्, वस् इन ण्यन्त धातुओं से परस्मैपद नहीं होता है, यह सूत्रार्थ है।

पा पाने इस भ्वादिगणीय धातु का निगरण अर्थ है। अतः निगरणचलनार्थेभ्यश्च इस सूत्र से कर्तृगामी क्रियाफल में परस्मैपद प्राप्ति होने पर उसका निषेध करने के लिए यह सूत्र है।

यहाँ विशेष - णिचश्च इस के योग से कर्तृगामी क्रियाफल में आत्मनेपद सिद्ध होने पर उस-उस विशेष अवस्था में बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रभ्यो णेः, अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् , निगरणचलनार्थेभ्यश्च ये तीनों सूत्र कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद का विधान करते हैं,इस प्रकार ये सूत्र णिचश्च इस सूत्र के अपवाद भूत है। अब प्रकृत सूत्र से अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् , निगरणचलनार्थेभ्यश्च इन दोनों सूत्रों से कर्तृगामी क्रियाफल में प्राप्त परस्मैपद का निषेध होता है। अब कहा जाता है- क्या वह निषेध परगामी क्रियाफल में प्राप्त परस्मैपद करने पर भी होता है। तब कहा जाता है - वहाँ यह निषेध नहीं है। केवल कर्तृगामी क्रियाफल होने पर प्राप्त परस्मैपद का ही निषेध है।

स्वतः कर्तृगामी क्रियाफल में आत्मनेपद, और परगामी में परस्मैपद होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसलिए पाययति वत्सान् पयः इत्यादि प्रयोग उचित होता है।

उदाहरण – पाययते। दमयते। आयामयते। आयासयते। परिमोहयते। रोचयते। नर्तयते। वादयते। वासयते।

सूत्रार्थ समन्वय –

1. **पाययते** – यहाँ भ्वादिगणीय पा पाने यह धातु है। इससे णिचि शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक् इस सूत्र से युगागम और अनुबन्धलोप होने पर पायि यह होता है। तत्पश्चात् निगरणार्थक होने से कर्तृगामी क्रियाफल में णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को निगरणचलनार्थेभ्यश्च इस सूत्र से बांधकर केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से निषेध होने पर पाययते यह रूप होता है।

2. **दमयते** – दमु उपशमे इस दिवादिगणीय धातु से णिच्, उपधावृद्धि होने पर दाम् इ इस स्थिति में जनीजघ्ष्क्नसुरञ्जोऽमन्ताश्च इस गणसूत्र से मिद्वद्भाव होने पर मितां ह्रस्वः इस सूत्र से उपधाह्रस्व होने पर दमि यह हुआ। तत्पश्चात् णिचश्च इससे प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इससे केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से उसका निषेध होता है। उससे दमयते यह रूप सिद्ध होता है।

3. **आयामयते** – आङ् उपसर्गपूर्वक यम उपरमे इस भ्वादिगणीय धातु से णिच् परे रहते उपधावृद्धि होने पर आयामि यह होता है। तत्पश्चात् णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है। अतः आयामयते यह रूप होता है।

4. **आयासयते** – आङ् उपसर्गपूर्वक यसु प्रयत्ने इस दिवादिगणीय धातु से णिच् होने पर उपधावृद्धि होकर आयासि यह होता है। तत्पश्चात् णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है। उससे आयासयते यह रूप होता है।

5. **परिमोहयते**– परि उपसर्गपूर्वक मुह वैचित्ये इस दिवादिगणाय धातु से णिच् होने पर लघूपधागुण होकर परिमोहि यह होता है। तत्पश्चात् णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से उसका निषेध होता है। उससे परिमोहयते यह रूप होता है।

6. **रोचयते**– रुच दीप्तावभिप्रीतौ च इस भ्वादिगणीय धातु से णिच् होने पर लघूपधागुण होकर रोचि इस णिजन्त धातु से णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है। उससे रोचयते यह रूप होता है।

7. **नर्तयते**- नृती गात्रविक्षेपे इस दिवादिगणाय धातु से णिच् होने पर लघूपधागुण होकर रोचि इस णिजन्त धातु से णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है। उससे नर्तयते यह रूप होता है।

8. **वादयते**- वद व्यक्तायां वाचि इस भ्वादिगणीय धातु से णिच् होने पर उपधावृद्धि होकर वादि इस णिजन्त धातु से णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है।उससे वादयते यह रूप होता है।

9. **वासयते**- वस निवासे इस वसगणीय धातु से णिच् होने पर उपधावृद्धि होकर वासि इस णिजन्त धातु से णिचश्च इस सूत्र से प्राप्त आत्मनेपद को बांधकर अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इस सूत्र से केवल परस्मैपद प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होता है। उससे वासयते यह रूप होता है।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. निगरणचलनार्थेभ्यश्च इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. उपरमति इत्यत्र परस्मैपद विधायक सूत्र कौन सा है?
3. व्याङ्परिभ्यो रमः इसके उदाहरण लिखिए?
4. प्राद्वहः इस सूत्र से क्या विधान किया जाता है, परस्मैपद अथवा आत्मनेपद?
5. न पादम्याङ् इत्यादि सूत्र को पूरा कीजिए।
6. अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् इसका उदाहरण क्या है?

पाठ का सार

अनुदात्तेत् धातु और ङित् धातु से आत्मनेपद होता है। पुनः स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इस सूत्र से क्रियाफल के कर्तृगामी होने पर आत्मनेपद होता है, क्रियाफल के परगामी होने पर तो परस्मैपद होता है, यह कहा जाता है। किन्तु शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् इस सूत्र से आत्मनेपद निमित्त हीन धातु से कर्ता में परस्मैपद हो, यह सामान्य रूप से परस्मैपद तथा आत्मनेपद विधान के विषय में कहकर तत्पश्चात् विशेष अर्थ के लिए यह पाठ आरम्भ किया गया है, यह जानना चाहिए।

क्रिया के विनिमय अर्थ को द्योतित करने के लिए आत्मनेपद होता है, व्यतिलुनीते इत्यादि में, कहीं उसका निषेध न गतिहिंसार्थेभ्यः इससे, व्यतिगच्छन्ति इत्यादि में। कहीं उपसर्ग योग से परस्मैपदी धातु से भी आत्मनेपद होता है। कहीं स्वरितञितः कर्तृऽभिप्राये क्रियाफले इससे परगामी क्रियाफल प्राप्त होने पर परस्मैपद को बांधकर आत्मनेपद का विधान किया जाता है, विक्रीणीते इत्यादि में। किञ्च सन्प्रत्ययपूर्वक जो आत्मनेपदी धातु है, उससे तुल्य सन्नन्तधातु से भी आत्मनेपद होता है। परगामी क्रियाफल होने पर आत्मनेपद विधान होता है, तथा सूत्र है–गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्य प्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः। कृ धातु ञित् है, अतः परगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद प्राप्त है अतएव कर्तृगामी क्रियाफल होने पर परस्मैपद विधान के लिए अनुपराभ्यां क्रियः यह सूत्र आरम्भ करते है। पुनः परस्मैपदप्रकरण में एक विशेष जानने योग्य है कि शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् यहाँ से कर्तरि यह भी पद अनुवर्तित होता है। इस कारण से परस्मैपद प्रकरणस्थ सूत्रों से जो परस्मैपद विधानरूप विशेष कहा जाता है, वह तो कर्तृवाच्य में होता है। इससे भाव और कर्म स्थल पर आत्मनेपद होता है यह संशय नहीं है,यह सम्यक् रूप से समझना चाहिए। वहाँ कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद विधान के लिए बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः, निगरणचलनार्थेभ्यश्च और अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात् ये तीन सूत्र आरम्भ किए गए हैं। पुनः उनका निषेधसूत्र भी आरम्भ किया गया है– न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः। इस प्रकार वहाँ वहाँ विशेष जानना चाहिए।

पाठांत प्रश्न

1. 'गन्धनावक्षेपण' इस सूत्र को पूरा करके व्याख्या कीजिए।
2. 'कर्तरि कर्मव्यतिहारे' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
3. 'विपराभ्यां जेः' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
4. 'पूर्ववत्सनः' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
5. 'दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
6. 'अनुपराभ्यां कृञः' इस सूत्र की उदाहरण सहित क्या कीजिए।
7. 'बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
8. 'अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
9. 'न पादम्याङ्' इस सूत्र को पूरा करके व्याख्या कीजिए।
10. 'अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों का उत्तर

26.1

1. क्रियाविनिमय।
2. भवति। सन्तिष्ठते।
3. विजयेत। पराजयते।
4. अनुदात्तङित आत्मनेपदम्।
5. न गतिहिंसार्थेभ्य इति निषेधात।
6. निविशते।
7. विक्रीणीते।
8. अन्यस्य योग्यछेदनक्रियाम् अन्यः करोति यह अर्थ है।

26.2

1. शतम् अपलपति।
2. अपलाप अर्थ में।
3. रथेन सञ्चरते।
4. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः।
5. सूचयति।
6. सन्प्रत्यय पूर्वक जो आत्मनेपदी धातु है,उससे तुल्य सन्नन्तधातु भी आत्मनेपद होती है।
7. प्रकथयति।
8. दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे।

26.3

1. भक्षणार्थक और चलनार्थक ण्यन्त धातुओं से कर्तृगामी क्रियाफल होने पर भी परस्मैपद होता है।
2. विभाषाकर्मकात्।
3. विरमति। आरमति। परिरमति।
4. परस्मैपदम्।
5. न पादम्याङ्यमाङ्यसपरिमुहरुचिनृतिवदवसः।
6. शेते कृष्णः, तं गोपी शाययति।

॥ छबीसवां पाठ समाप्त॥